परमात्मा से प्यार ही सहज योग

दुनिया में ऋषि मुनियों ने परमात्मा की एक झलक के लिए अपने सम्पूर्ण जीवन को लौकिक कार्यों से अलग रख उसकी प्राप्ति में लगाया। वैसे ही तपस्या हमारे ब्राह्मण जीवन की भी एक विशेषता है। इसी तपस्या को हम सहज योग कहते हैं। और योग का अर्थ याद है। हमने देखा कि तपस्या शक्तिशाली भी है तो सहज भी है। तो पहले हम अपने आप में चेक करें कि सचमुच हम जो कहते हैं सहज योगी, वह सहज अनुभव होता है? अगर योग कभी मुश्किल, कभी सहज अनुभव होता है तो मुश्किल के समय हम योगी हैं या योद्धे हैं? जब कोई बात होती है, तब योग में युद्ध चलती है, तो क्या वह सहज योग हुआ? ब्राह्मण जीवन में चेक करना है कि क्या मैं सदा योगी जीवन में रहता हूँ या कभी योगी जीवन में, कभी योद्धे जीवन में? योग माना परमात्मा की याद निरन्तर नहीं है तो उसको योगी जीवन नहीं कहा जायेगा। तपस्या तब सफल हो सकती है जब हमारा परमात्मा से सच्चा प्यार हो। परमात्मा का हमसे प्यार है उसका सबूत है जब कोई परिस्थिति आती है और दिल से परमात्मा को याद करते हैं तो परमात्मा उसी समय प्रत्यक्षफल देते हैं। परमात्मा का प्यार हमसे है, लेकिन हमारा भी इतना ही प्यार परमात्मा से है? प्यार ऐसी चीज़ होती है जो उसकी याद भुलाना भी मुश्किल होता, हमारे एक से ही सर्व सम्बंध हैं - इसलिए याद सहज है। अगर एक भी सम्बंध हमारा परमात्मा से कम है तो निरंतर योग कभी नहीं रह सकता। कभी कभी ऐसे होता है कि जो मुख्य सम्बंध हैं, पिता, शिक्षक, सद्गुरू का वो तो ठीक है, लेकिन दोस्त के सम्बंध या मैं सीता हूँ वो राम है। आपको लगेगा कि इन सम्बंधों की क्या आवश्यकता है? लेकिन देखने में आता है कि कोई भी रास्ता बुद्धि के जाने का होता है और बुद्धि ना जावे ये हो ही नहीं सकता। जब ट्रेन

आने वाली होती है तो भल रास्ता बंद करते हैं लेकिन स्कूटर वाले, साइकिल वाले रुकते नहीं, नीचे से चले जाते हैं। यहाँ भी मन बहुत फास्ट जाता है। कहाँ न कहाँ से रास्ता निकाल लेता है। परमात्मा से यदि कोई एक सम्बंध भी अनुभव में नहीं है, कहने में तो कह देते हैं सर्व सम्बंध परमात्मा से हैं, एक ही परमात्मा हमारा संसार है, लेकिन प्रैक्टिकल में कोई भी दैहिक सम्बंध में हमारा लगाव है और परमात्मा से हमारे सर्व सम्बंध नहीं हैं तो हमारी तपस्या कभी भी सिद्ध नहीं हो सकती। इसलिए तपस्या को शक्तिशाली और निरंतर बनाने के लिए परमात्मा से सर्व सम्बन्ध ज़रूरी है। अभी यही खुशी का, सुख का वायुमण्डल फैलाओ क्योंकि दुनिया में दुःख बढ़ रहा है। लेकिन हैं तो सभी हमारे भाई ही ना, तो जो दुःखी हैं उन्हों को सुख के वायब्रेशन्स दो। आपको कोई भी देखे, वो कितना भी मुरझाया हो, आपको देख कर मुस्कुराने लगे, अब ऐसी सेवा करके दुनिया को परिवर्तन करना है। इसके लिए मैं अपना चेहरा, अपनी चलन, अपना बोल जो भी है वो ऐसा करूँ जो हमको देख के दूसरे भी खुश हो जायें। तो यह सर्विस करनी आती है, योग में बैठके सकाश देना, यह आता है ना! सारी दुनिया आपके द्वारा सकाश लेने के लिए तरसती है, क्योंकि दुःख तो बढ़ ही रहा है। आज सुख चाहते सभी हैं, तो आप द्वारा वो सुख और शांति की जो सकाश जायेगी ना, तो दुनिया परिवर्तन हो जायेगी। तो अभी ऐसी सेवा करेंगे ना! ऐसे नहीं जो टीचर्स हैं वही इस सेवा के निमित्त हैं, हम एक एक सेवा के लिए निमित्त हैं। अब मन को चेक करो और मन को बिज़ी रखो। सुबह उठकर मन को बिज़ी रखने का प्रोग्राम बनाके उसी अनुसार सारे दिन चलते रहो। तो सभी ऑल वर्ल्ड नो प्रॉब्लम हो जायेंगे। समस्याओं से स्वयं को भी मुक्त रखेंगे और दूसरों को भी निर्विघ्न बनायेंगे।

ना अवसर गंवायें, ना ही भाग्य

चलते-चलते यूं ही कोई मिल गया... ये गीत आपने सुना ही होगा। पर कइयों को इस गीत से आगे वो ही मिल गया जो वो दिल से चाहते थे। फिर तो कहना ही क्या... जिसको दिलपसंद मिल जाये, जहां दिल को आराम मिल जाये, वो दिलाराम उनके जीवन का हिस्सा बन जाये, फिर तो कहना ही क्या...! ये अवसर हर इंसान के पास आता है। पर वो उस अवसर को अपनी सुंदर अवस्था में बदल नहीं पाता। जो वो चाहता है। चाहते हुए, समझते हुए भी उनके कई ऐसे संस्कार उन्हें उनके भाग्य से वंचित कर देते हैं। फिर पछतावत होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत..., ये कहावत उनके ऊपर सटीक बैठती है। हम आपके सामने एक कहानी रख रहे हैं, जिससे आप इसे और अच्छी तरह से समझ पायेंगे...

एक कुम्हार को मिट्टी खोदते हुए अचानक एक हीरा मिल गया। उसने उसे अपने गधे के गले में बांध दिया। एक दिन एक बनिए की नज़र गधे के गले में बंधे उस हीरे पर पड़ गई। उसने कुम्हार से उसका मूल्य पूछा। कुम्हार ने कहा - सवा सेर गुड़। बनिए ने कुम्हार को सवा सेर गुड़ देकर वह हीरा खरीद लिया। बनिए ने भी उस हीरे को एक चमकीला पत्थर समझा था, लेकिन अपनी तराजू की शोभा बढ़ाने के लिए उसकी डंडी से बांध दिया।

एक दिन एक जौहरी की नज़र बनिए के उस तराजू पर पड़ गई। उसने बनिए से उसका दाम पूछा। बनिए ने कहा - पाँच रुपए।

जौहरी कंजूस व लालची था। हीरे का मूल्य केवल पाँच रुपए सुनकर समझ गया कि बनिया इस कीमती हीरे को एक साधारण पत्थर का टुकड़ा समझ रहा है।

वह उससे भाव-ताव करने लगा... पाँच नहीं, चार रुपए ले लो।

बनिये ने मना कर दिया, क्योंकि उसने चार रुपए का सवा सेर गुड़ देकर खरीदा था।

जौहरी ने सोचा कि इतनी जल्दी भी क्या है! कल आकर फिर कहूंगा, यदि नहीं मानेगा तो पांच रुपए देकर खरीद लूंगा।

संयोग से दो घंटे बाद एक दूसरा जौहरी कुछ ज़रूरी सामान खरीदने उसी बनिये की दुकान पर आया। तराजू पर बंधे हीरे को देखकर वह चौंक गया। उसने सामान खरीदने के बजाए उस चमकीले पत्थर का दाम पूछ लिया। बनिए के मुख से पाँच रुपए सुनते ही उसने झट जेब से निकालकर उसे पांच रुपए थमाए और हीरा लेकर खुशी-खुशी चल पड़ा।

दूसरे दिन वह पहले वाला जौहरी बनिए के पास आया। पांच रुपए थमाते हुए बोला - लाओ भाई, दो वह पत्थर। बनिया बोला - वह तो कल ही एक दूसरा आदमी पांच रुपए में ले गया।

यह सुनकर जौहरी ठगा सा महसूस करने लगा। अपना गम कम करने के लिए बनिए से बोला - अरे मूर्ख, वह साधारण पत्थर नहीं, एक लाख रुपए कीमत का हीरा था।

बनिया बोला, मुझसे बड़े मूर्ख तो तुम हो। मेरी दृष्टि में तो वह साधारण पत्थर का टुकड़ा था, जिसकी कीमत मैंने चार रुपए मूल्य के सवा सेर गुड़ देकर चुकाई थी। पर तुम जानते हुए भी एक लाख की कीमत का वह पत्थर, पाँच रुपए में भी नहीं खरीद सके!

मित्रों, हमारे साथ भी अक्सर ऐसा होता है... हमें हीरे रूपी सच्चे शुभ चिन्तक भी मिलते हैं और सुंदर अवसर भी, लेकिन अज्ञानतावश पहचान नहीं कर पाते और उसकी उपेक्षा कर बैठते हैं, जैसे इस कथा में कुम्हार और बनिए ने की।

कभी पहचान भी लेते हैं, लेकिन अपने अहंकार, अलबेलेपन और टालने की आदत के चलते तुरंत स्वीकार नहीं कर पाते और परिणाम पहले जौहरी की तरह हो जाता है और पश्चाताप के अतिरिक्त कुछ हासिल नहीं हो पाता।

सिलिकॉन वैली-मिलपिटास(यू.एस.ए.)। दीपावली के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में शहर के प्रतिष्ठित लोगों के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कुसुम।

टूण्डला-रामनगर(उ.प्र.)। एस.के.एच., अमर उजाला, दैनिक जागरण, हिन्दुस्तान, डी.एल.ए. के सभी पत्रकारों को सम्मानित करने के पश्चात् चित्र में उनके साथ ब्र.कु. अमर तथा ब्र.कु. विजय बहन।

रशिया-मॉस्को। दीपावली के अवसर पर ब्रह्माकुमारीज़ के 'द लाइट हाउस ऑफ द वर्ल्ड' सेवाकेन्द्र पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डी.बी. वेंकटेश वर्मा,एम्बेसडर ऑफ इंडिया टू द रशियन फेडरेशन को ईश्वरीय स्मृति चिन्ह भेंट करते हुए सेवाकेन्द्र निदेशिका ब्र.कु. सुधा।

पोखरा-नेपाल। फिलीपीन्स की प्रिंसेस मारिया अमोर टोरेस व थाइलैंड की पीस एम्बेसडर डॉ. अफिनीता चैचना को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. परिणीता। साथ हैं ब्र.कु. शैलेष राज बरल, ब्र.कु. शोभा तथा अन्य।

टोरोंटो। सेवेन्थ पार्लियामेंट ऑफ द वर्ल्ड्स रिलीजन्स का आयोजन मेट्रो टोरोन्टो कन्वेंशन सेंटर में किया गया। जिसका विषय था 'द प्रॉमिस ऑफ इन्क्ल्यूज़न;द पॉवर ऑफ लव'। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सुंदर आध्यात्मिक प्रदर्शनी भी लगाई गई तथा इस दौरान विभिन्न विषयों पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा अपने विचार रखे गये। कार्यक्रम के दौरान चित्र में विभिन्न धर्म प्रतिनिधियों के साथ ब्र.कु. मौरीन,यू.के.। इस कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज़ से ब्र.कु. डॉ. बिन्नी,माउण्ट आबू, ब्र.कु. जॉर्जिना,यू.के., ब्र.कु. वैलेरियन,जिनेवा, ब्र.कु. डेमियन,ऑस्ट्रेलिया तथा अन्य ब्र.कु. भाई बहनें शरीक हुए।

लंडन। एलेक्ज़ेन्डर पैलेस में 'ओम योगा शो और माइंड बॉडी स्पीरिट शो' के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित 'द ह्यूमन सोल कनेक्शन एंड द राजयोग एग्ज़ीविशन' में शहर के लोगों को राजयोग मेडिटेशन के बारे में बताते हुए ब्र.कु. भाई बहनें।

वाराणसी-उ.प्र.। कौमी एकता एवं साझा संस्कृति मंच,वाराणसी के तत्वावधान में आयोजित 'अमन भाईचारा सम्मेलन' में ब्रह्माकुमारीज़ को आमंत्रित किये जाने पर वहाँ सम्बोधित करने के पश्चात् उपस्थित हैं श्रीराम नगर कॉलोनी सेवाकेन्द्र से राजयोगिनी ब्र.कु. सरोज, बिशप यूजिन जोसफ, मौलाना अब्दुल बातिन नोमानो, डॉ. निर्मला जैन तथा अन्य धर्म प्रतिनिधि।

सम्बलपुर-ओडिशा। 'पुनर्चिंतन द्वारा पुनर्मिलन एवं पुनर्जागरण' विषयक स्मार्क सम्मेलन का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. पार्वती, ब्र.कु. सुशीला, ब्र.कु. श्रीकान्त, ब्र.कु. डॉ. अदिति सिंघल, सुकान्त त्रिपाठी,प्रोजेक्ट डायरेक्टर, डी.आर.डी.ए,सम्बलपुर तथा डॉ. पंचानन नायक,ए.डी.एम.ओ.,सम्बलपुर।